इसके अतिरिक्त निम्न बातें, इस रोग की रोकथाम के लिए महत्वपूर्ण है :-

- *रोग फैलने की सूचना तुरन्त नजदीकी पशु चिकित्सक को दें ।*
- *संकर नसल के पशुओं में इस रोग के बचाव का टीका लगवाना कभी न भूलें ।*
- *बेहतर है कि सभी पशुओं (गायों, भैंसों) को इस रोग का टीका लगवाएं ।*
- *बीमार पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग कर दें व उसके खाने-पीने का प्रबन्ध अलग से करें ।*
- *बीमार पशु को सूखें स्थान पर बांधे और कीचड़ वाले या गीले स्थानों पर न जाने दें ।*
- *बीमार पशु को बेचना, गांव के बाकी पशुओं के लिए खतरा है अतः बीमार पशु को न बेचें और न ही खरीदें ।*
- *जहां-जहां पशु की लार गिर रही हो वहां पर कपड़े धोने का सोड़ा या चूना डालते रहें अथवा फिनाईल का घोल छिड़क दें ।*
- *मृत पशु को या तो जला दें या गहरा गढ्ढा खोदकर पर्याप्त चूने की मात्रा डाल कर गाड़ दें ।*

आलेख

डॉ. आलोक कुमार शर्मा

सह प्राध्यापक

पशु चिकित्सा एवम् पशु विज्ञान महाविद्यालय,

चौ. स. कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय,

पालमपुर-176 062

मुँह-पका, खुर-पका (खुरमुहीं) रोग और उससे बचाव

पशु चिकित्सा एवम् पशु विज्ञान प्रसार विभाग

पशु चिकित्सा एवम् पशु विज्ञान महाविद्यालय,

चौ. स. कु. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय,

पालमपुर-176 062

मुँह-पका खुर-पका (खुरमुहीं) रोग

पशुओं के संक्रामक रोगों में मुँह-पका खुर-पका प्रमुख रोग है । यह रोग एक विषाणू या वाईरस के द्वारा होता है जिसे आंख से या साधारण सूक्ष्मदर्शी यंत्रों से नहीं देखा जा सकता है । आमतौर पर संकर नसल की गायों में और बछड़ों में यह रोग बहुत ही संक्रामक होता है । देसी नसल की गायों में व भैंसों में इसकी संक्रामता कम होती है । दूधारू पशु सूख जाते है, बैलों की कार्य क्षमता बहुत ही कम हो जाती है और संकर नसल के बछड़े-बछड़ियां मर भी जाते है । मुंह-पका, खुर-पका रोग किसी भी उम्र की गायें, भैंसों व उसके बच्चों में हो सकता है । इसके लिए काई निश्चित मौसम नहीं है अर्थात् किसी भी गांव, किसी भी मौसम में फैल सकता है । लक्षण फूटने पर इसका कोई इलाज नहीं है । रोग से पहले ही टीके लगवा लेना ही एकमात्र बचाव है ।

लक्षण : रोग के आने पर पशु को तेज बुखार हो जाता है । बीमार पशु के मुंह, मसूड़े, जीभ के ऊपर, नीचे, होंठ के अन्दर के भाग और खुरों के बीच की जगहों पर दाने उभर आते है । धीरे-धीरे से दाने मिल कर बड़ा छाला बना देते है । समय पाकर से छाले फट जाते है और उनमें जख्म हो जाते है।

ऐसी स्थिति में पशु जुगाली करना बन्द कर देता है और मुंह से लगातार लारें गिरती रहती हैं । मुहं में छालों के कारण पशु कुछ भी खा-चबा नहीं सकता और खुरों में घाव होने से पशु लंगड़ा कर चलता है । खुरों के बीच के घावों पर कीचड़ मिट्टी आदि लगती है तो उनमें कीड़े पड़ जाते है और पशु को बहुत दर्द होता है ।

दुधारू पशुओं में दूध का उत्पादन एकदम गिर जाता है और वे कमजोर होने लगते हैं ।

समय पाकर अथवा उपयुक्त इलाज होने के बाद जख्म भर जाते हैं। संकर पशुओं व बछड़ों-बछड़ियों में यह रोग कई बार मौत का कारण भी बन जाता है ।

रोग का फैलना : बीमार पशु के आस-पास व साथ रहने वाले सभी पशुओं में इस रोग के फैलने की प्रबल सम्भावना रहती है । जब स्वस्थ पशु व बीमार पशु एक ही स्थान पर खाते पीते हैं तो यह रोग आगे से आगे फैलता रहता है । स्वस्थ पशु के दाने व पानी में जब बीमार पशु की लार गिरती है तो इस रोग के विषाणु स्वस्थ पशु तक पंहुचते है । इसके अतिरिक्त बीमार पशु के साथ की दूषित हवा भी कई बार इस रोग को फैलाने का कारण होती है, अर्थात् बीमार पशु के विषाणु हवा द्वारा स्वस्थ पशु तक पहुंच कर उसे भी बीमार कर सकते हैं ।

इलाज : विषाणुओं द्वारा उत्पन्न रोगों का समुचित इलाज अभी तक नहीं खोजा जा सका है । फिर भी कुछ उपचार इस रोग से सहायक होते हैं । पैरों के घावों को नियमित रूप से फिनाईल से साफ करके पट्टी की जाती है ताकि घाव अधिक न बढ़े और उनमें कीड़े न पड़ें । मुंह के छालों को लाल दवाई के घोल से धोना भी लाभदायक रहता है । इसीलिए बीमार पशु का इलाज कराना बहुत ही जरूरी है ।

रोकथाम : विषाणु रोगों की दवाओं के अभाव में रोग की रोकथाम ही महत्वपूर्ण होती है । इसीलिए पशुपालकों को चाहिए कि इस रोग से मुक्ति के लिए समय रहते पशु चिकित्सालय से सम्पर्क करके अपने पशुओं को नियमित तौर पर टीके लगवाते रहें । इन टीकों की जानकारी सभी पशु औषधालयों व चिकित्सालयों में रहती है ।